"कौन कहता है"

—बबली (फरीदाबाद)

आप इमाम अंजू गोप है, होत आगे रोशन नूर।
रात अँधेरी क्यों रहे, जब अग्या कायम सूर ॥
कौन कहता है—श्री प्राणनाथ जी के दीदार नहीं होते
होते हैं दीदार रूहों को—अपने पिया के इसी जिमी में
कौन कहता है श्री प्राणनाथ जी धाम चले गये वापिस
वह जा नहीं सकते—इस दुनियां को—मुक्ति दिये बिगर
कौन कहता है—वह पूर्णब्रह्म—अक्षरातीत—मेहेंदी इमाम
जिसने कलयुग में आना है अभी नहीं आए
वह आ चुके हैं—ग्यारवी सदी में—ग्रन्थों के हिसाब से इस जहां में
कौन कहता है—श्री प्राणनाथ जी सबको नजर क्यों नहीं आते
वह हैं छिपे हुए—अपनी रूहों के लिए—जाहेर होंगे भिस्तों में
कौन कहता है—पिया दूर हैं हमसे
वह अंग संग हैं हमारे—वह पल पल साथ हैं हमारे
कौन कहता है—बड़े बड़े ज्ञानी पंडितों महाराजों के पास ही ज्ञान है
सच्चा ज्ञान तो सिर्फ प्राप्त हो सकता है अखण्ड वानी से
कौन कहता है—अमीरी-धन दौलत में ही इन्सान सुखी हैं
धनी तो मिलते हैं सुन्दर साथ के मिलावे में
कौन कहता है सुन्दर साथ के दिलों में कुछ नहीं
मान-शान मैं अहंकार—खुदी को तजो तो—बहुत कुछ मिल जाता है
सुन्दर साथ के चरणों में
कौन कहता है इन्चोली आश्रम में कुछ नहीं
नहीं आए कभी चोली-तो आओ एक बार—देखो अपनी आँखों से
कौन कहता हैं—सब झूठ है—पाखण्ड है—फरेब है
झूठ—झूठ होता है— सच सच होता है
सच छिप नहीं सकता—सच की हमेशा जीत होती है